Read India
An imprint of Pratham Books

नौका की सैर

हरमिन्दर ओहरी

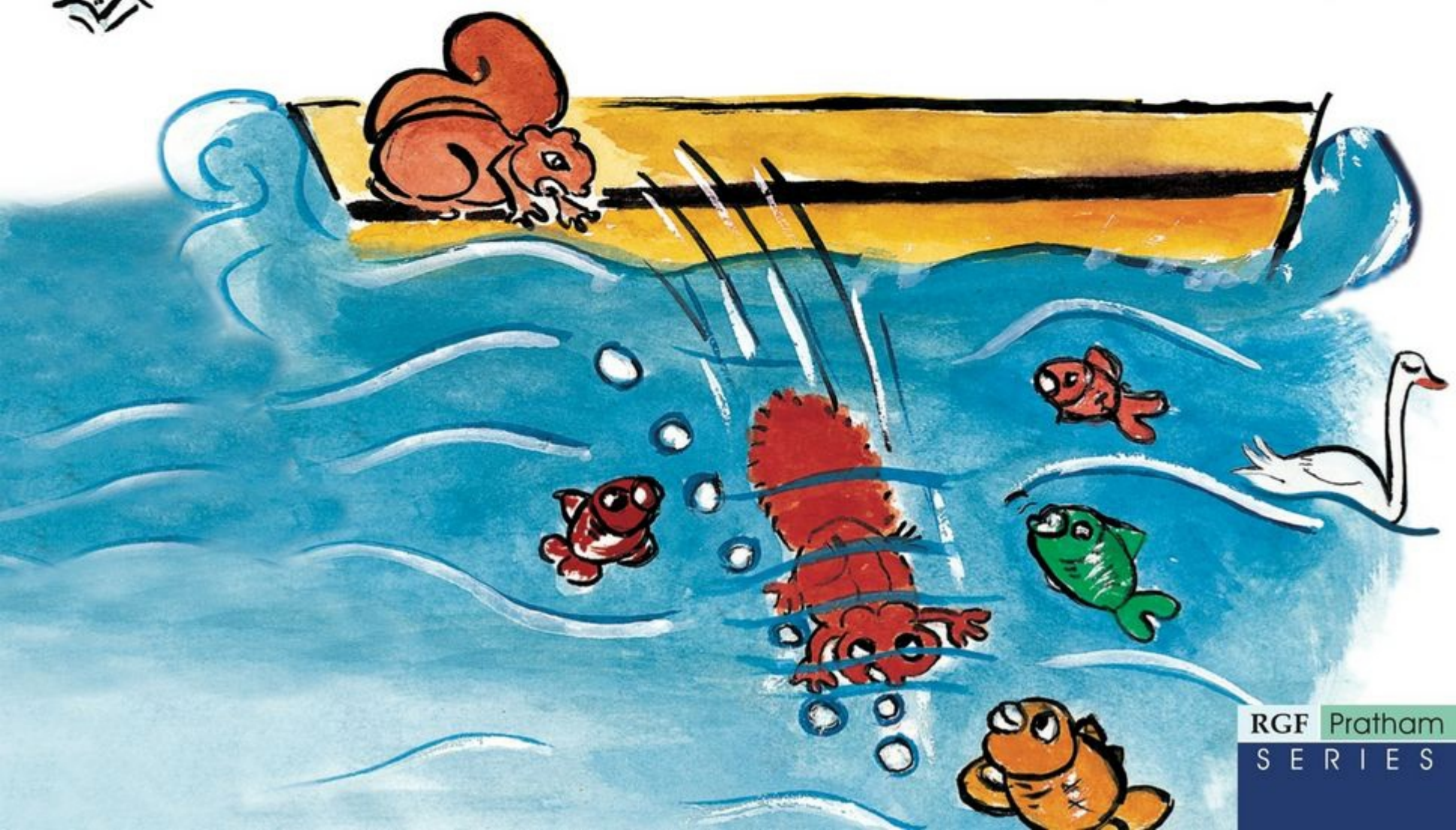

RGF Pratham
SERIES

Original Story (*English*) The Boat Ride by Herminder Ohri
© Rajiv Gandhi Foundation-Pratham Books, 2004

Third Hindi Edition: 2009

Illustrations: Herminder Ohri
Design: Moonis Ijlal
Hindi Translation: Pratham Books Team

ISBN: 81-8263-042-8

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th "C" Main, 6th 'B' Cross, OMBR Layout,
Banaswadi, Bangalore 560 043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices:
Mumbai ✆ 022-65162526
New Delhi ✆ 011-65684113

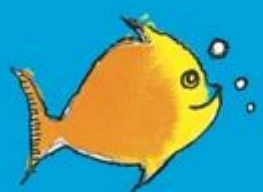

Typesetting & Layout by:
Pratham Books, Delhi

Printed by:
Shubhodaya Printers, Bangalore 560 004

Published by: Pratham Books | www.prathambooks.org

Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
http://www.prathambooks.org/cc

नौका की सैर

लेखन एवं चित्रांकन
हरमिन्दर ओहरी

हिन्दी अनुवाद
प्रथम पुस्तक समूह

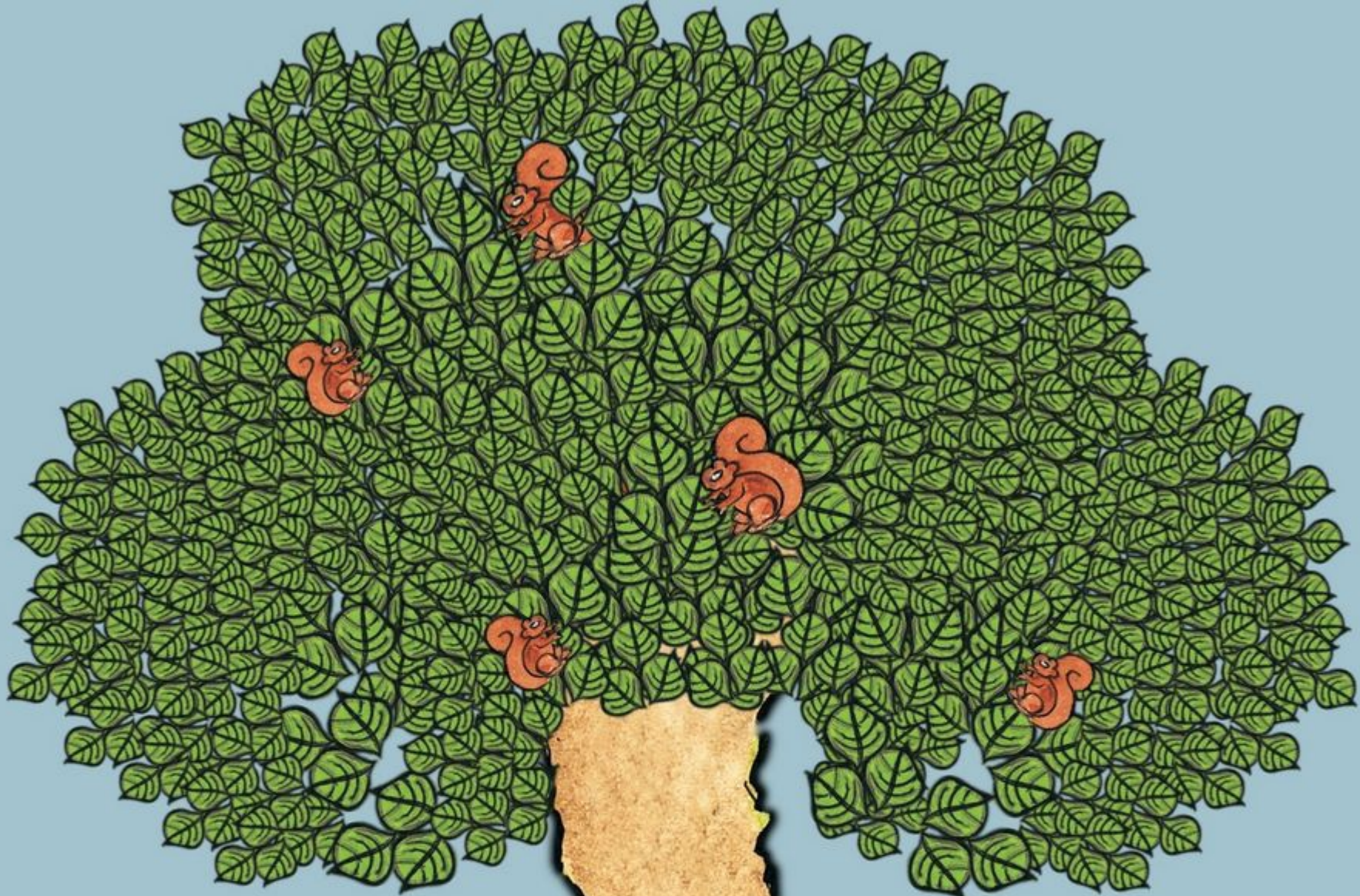

शहर के एक छोटे से बगीचे में पीपल का एक बड़ा-सा पेड़ है। उस पेड़ पर गिलहरियों का एक परिवार रहता है। विक्की उस कुनबे का बड़ा ही शेखीमार सदस्य है। उसका चचेरा भाई काटो, दूर जंगल से उससे मिलने आया है।

''आज हम एक बड़ी नौका में घूमने जायेंगे,'' विक्की ने काटो से कहा। काटो घबराया और फुसफुसाया, ''ल...ल... लेकिन मुझे तो पानी से डर लगता है। मुझे तो तैरना भी नहीं आता।''

''रहने भी दे डरपोक! विक्की के रहते, तुझे किस बात का डर? मैं तो कितनी बार नाव पर गया हूँ।'' आगे-आगे विक्की अकड़ते हुए चला।

किनारे पर एक नाव बाँस से बँधी हुई थी। वे दोनों उसकी रस्सी खोलने भागे। नौका पर सवार होकर, वे सैर का मज़ा ले रहे थे।

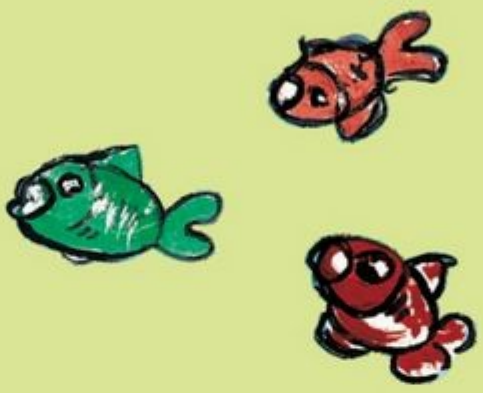

कुछ ही देर में, नौका नदी में हिचकोले खाती, पेड़ों के बगल से हिलती डुलती आगे बढ़ी। काटो ने बहुत सारी बत्तखों को तैरते हुए देखा। मछलियाँ भी पानी से सिर निकालकर होंठ गोल करके 'हैलो' बोलतीं। हंसों का एक जोड़ा भी अपनी लम्बी ख़ूबसूरत गर्दन मटकाते हुए पास से गुज़रा।

7

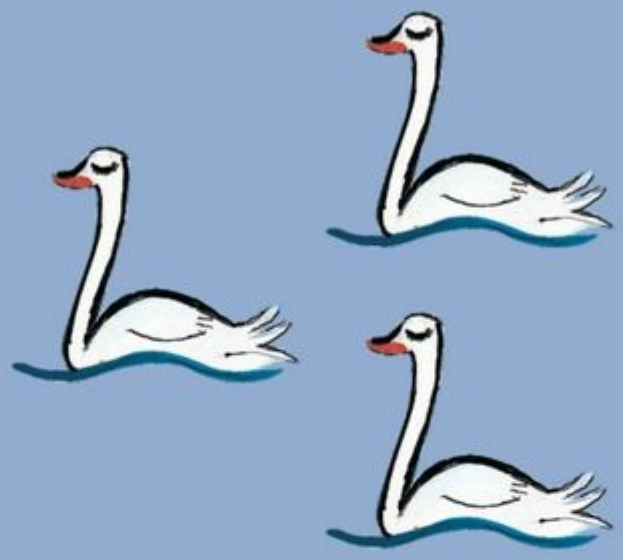

काटो का मन हुआ, वह उचककर उन्हें छू ले। और इस चक्कर में वह पानी में जा गिरा। गिरते-गिरते काटो ने कुछ मछलियों को उसका रास्ता काटते हुए देखा। ''मुझे बचाओ, बचाओ मुझे,'' पानी की लम्बी घूँटें लेते हुए उसने उन्हें पुकारा।

9

विक्की को कुछ भी नहीं सूझ रहा था। वह नौका के एक छोर से दूसरे छोर तक कूदता रहा और चिल्लाया, ''अरे कोई बचाओ!

गिलहरी पानी में...पानी में डूब रही है।''

हंस ने उसकी पुकार सुनते ही पानी में अपना सिर डुबाया

और बड़ी आसानी से काटो को

अपनी चोंच में उठाकर नौका

में डाल दिया।

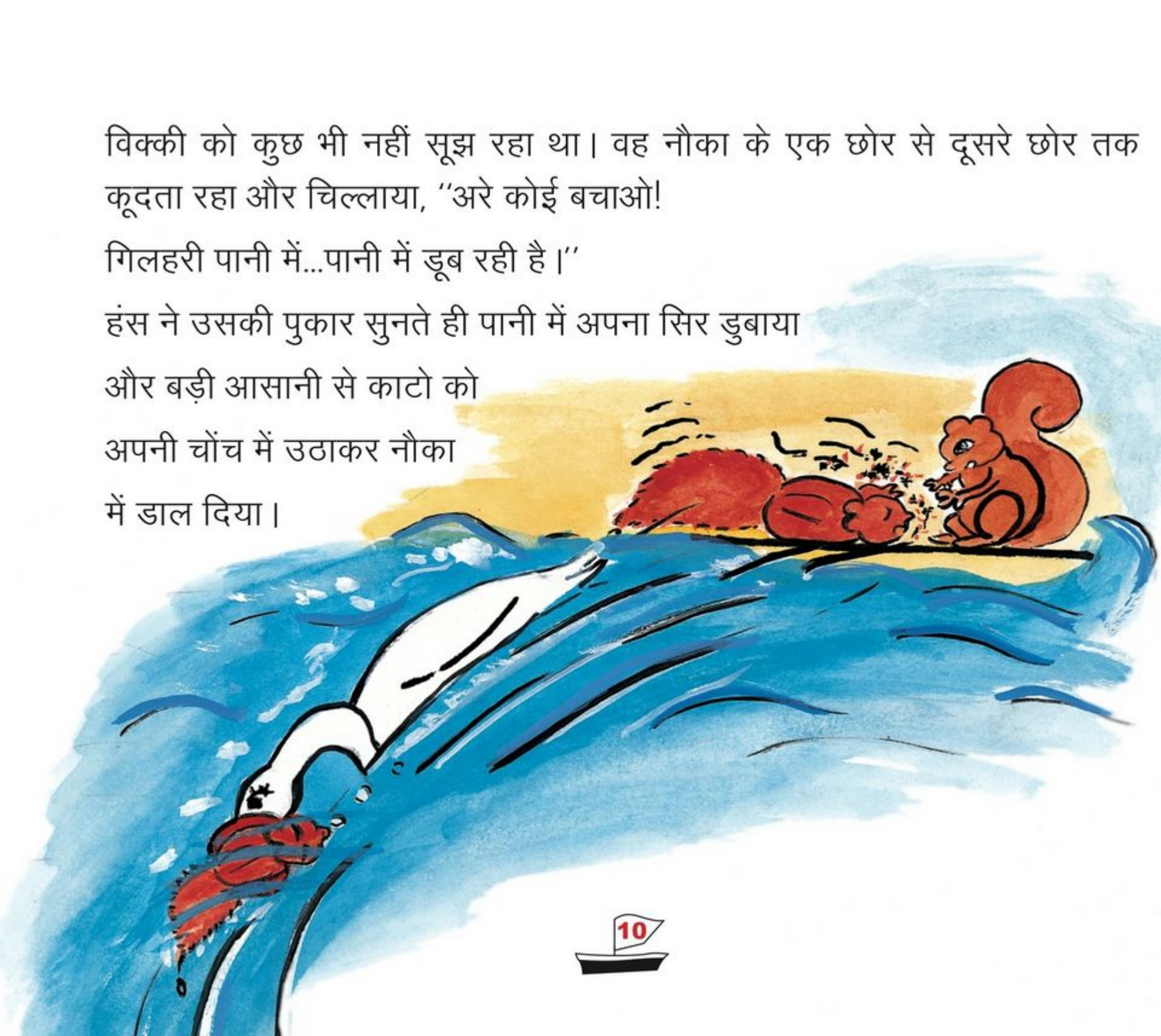

काटो ठंड से काँपते हुए धूप में अपने को सुखाने की कोशिश कर रहा था। पास में विक्की चुपचाप बैठा हुआ था। जब काटो के बाल थोड़ा सूख गये और शरीर में थोड़ी गर्मी आ गयी, वह बोल उठा, "कितना मज़ा आया! जब मेरे साथी इस किस्से को सुनेंगे तो उन्हें विश्वास ही नहीं होगा।"

काटो को लग रहा था मानो वह एक बहुत बड़ा हीरो और जहाज़ का जाँबाज़ कप्तान बन गया हो!

जब नौका किनारे पर पहुँची, काटो जल्दी से जल्दी सबको अपने कारनामे के बारे में बता देना चाहता था। दिन की सारी घटनाओं के बाद, काटो का सिर नौका की तरह चक्कर खा रहा था।

खाने की मेज़ पर जैसे ही उसने सिर रखा, उसकी आँखें बंद होने लगीं और वह गहरी नींद में डूब गया।

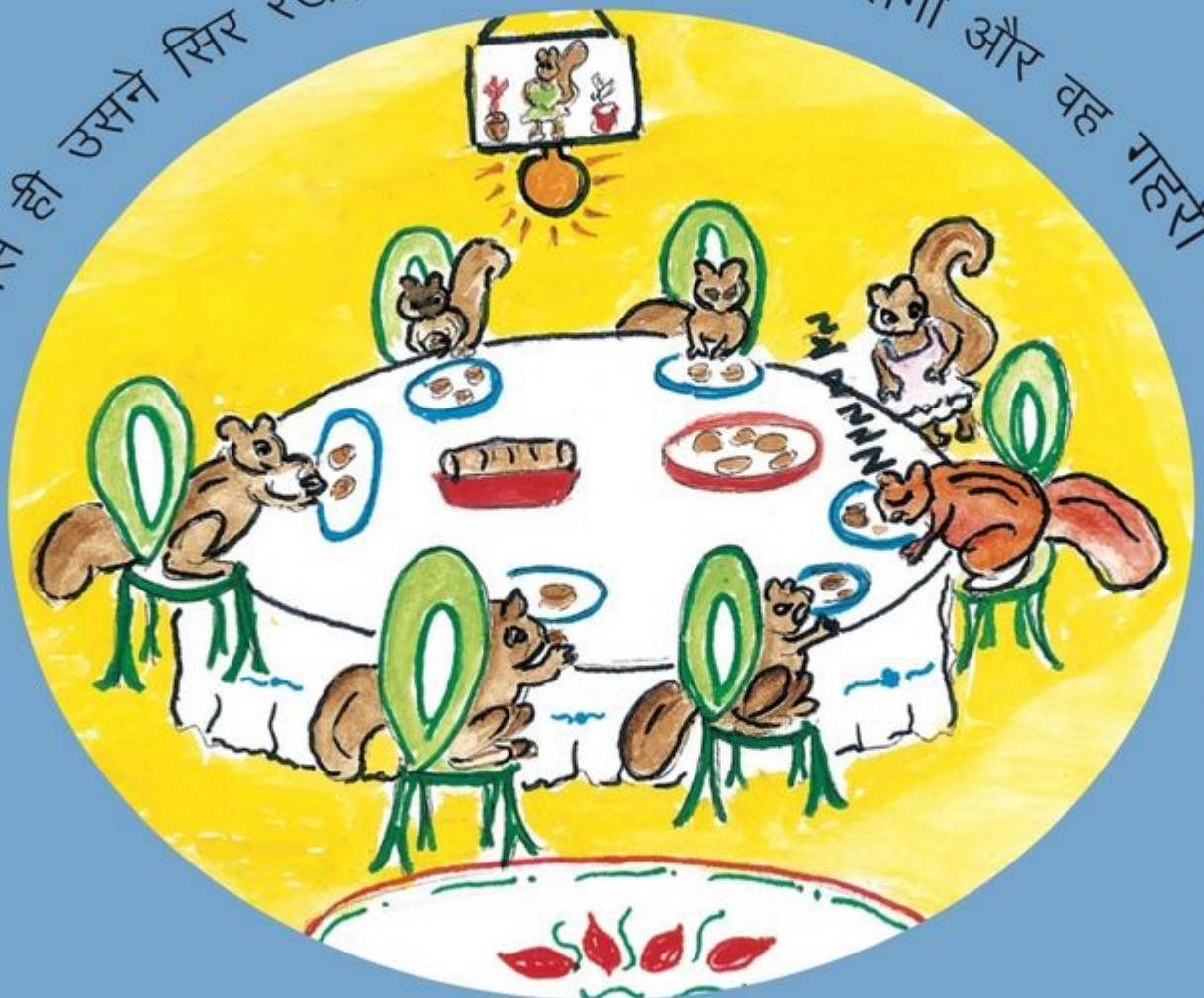

विक्की गिलहरी शेखीमार है। एक दिन उसका चचेरा भाई उससे मिलने आया। जब दोनों नाव की सैर पर गये तो बड़ा मज़ा आ रहा था कि अचानक...कुछ हुआ! दो गिलहरियों के मज़ेदार कारनामों की कहानी।

इस शृंखला की अन्य पुस्तकें

हमारी खूबसूरत दुनिया • एक बड़ी मुसीबत

रोन्दू और मुक्की • छुटकू मकड़ा

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिये www.prathambooks.org पर लॉग आन करें।

हमारी किताबें अंग्रेज़ी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बांग्ला, पंजाबी, उर्दू व उड़िया में भी उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की बाल पुस्तकें प्रकाशित करने वाली ग़ैर मुनाफ़ा प्रकाशन संस्था है।

ISBN 81-8263-042-8

9 788182 630420

Age Group: 7-10 years
Nauka Ki Sair (Hindi)
MRP: Rs. 20.00